शिवोम् वाणी

(चुतुर्थ खण्ड)

ब्रह्मलीन श्री १००८ स्वामी विष्णुतीर्थ जी महाराज

शिवोम् - वाणी

(चतुर्थ खण्ड)

जिसकी कृपा, प्रेरणा एवं शक्ति
के हृदय में कार्यशील होने के
फलस्वरूप यह उद्गार प्रकट हुऐ,
उसी के श्री चरणों में समर्पित।

शिवोम्

प्रकाशक

स्वामी शिवोम् तीर्थ गुरू

सुधा महायोग श्राश्रम जबलपुर

मूल्य १० रूपये

मुद्रक

जैक प्रिंटिंग प्रेस, जैक आर आर सी, जबलपुर

प्राक्कथन : आदरांजलि

शिवोम् वाणी चतुर्थ खण्ड में संकलित हिन्दी, उर्दू व पंजाबी भजन, गजलें इत्यादि भाषा, भाव तथा अनुभूति की तीव्रता, सभी दृष्टियों से उच्च कोटि की हैं। भावप्रवणता, समर्पण एवम् चिन्तन- शीलता का समन्वित सौंदर्य इन्हें निष्ठापूर्ण नवीनता प्रदान करती है। संकलन के भजनों में एक परिष्कृत मस्तिक की बौद्धिकता, प्रेमानुभूति की लौकिक-प्रलौकिक रूप-छवि, मिलन-वियोग और आकर्षण - विकर्षण के प्रच्छन्न बिम्ब सार्थकता के साथ संजोये गये प्रतीत होते हैं।

गुरूदेव की रचना प्रक्रिया और बिम्बविधान के समन्वित प्रवाह ने अनुभूति और विचारों में अन्तर्निहित लय का ऐसा सन्धान किया है कि समस्त सृजन, युगधारा के साथ गतिमान रूप से प्रवाहित होने में सफल रहा है।

प्रकृति व परोक्षसत्ता के अलौकिक सौन्दर्य-साधक की उद्वेलित भावउमियाँ ही क्रियमाण प्रकृति के शिवत्व को व्यक्त करने वाले दृश्य - कूट के ऐसे बिम्ब प्रस्तुत कर पाने में सक्षम हैं कि जीवन-मृत्यु की जटिल भंगिमाएँ भी सहज रूप में बोधगम्य हो गयी हैं।

गुरूदेव की कल्पनाएँ व उपमाएँ मात्र वायवी न होकर व्यवहारिक जगत के अनुकूल मन-प्राणों के स्पन्दनों को स्पर्श करने वाली हैं जिससे श्रोता - पाठक सहजता एवम् सुबोधता का अनुभव करेंगे।

इसके प्रकाशन से भारतीय भक्तिकाव्य - परम्परा गौरवान्वित हुई है।

इति शुभम्

ता० २८/१२/६३

नूर- निवास

नेपियर टाउन, जबलपुर

डॉ० आशुतोष श्रीवास्तव

मानसेवी सचिव

स्वामी शिवोम् तीर्थ गुरू

सुधा महायोग आश्रम जबलपुर

दो शब्द

समस्त विषम परिस्थितियों में पूज्य गुरूदेव द्वारा "स्वामी शिवोम् तीर्थ गुरू सुधा महायोग श्राश्रम जबलपुर" के निर्माण की स्वीकृति देना जीवन की परम सुखद घटना में से एक है। इसके बाद परम विस्मयकारी घटना ८ माहों में वृहताकार आश्रम का निर्माण पूरण होना है। इससे आश्चर्य की बात पू० गुरुदेव का फरवरी ९४ के स्थान पर सितम्बर ९३ में ही अमेरीका से भारत वापस प्राना है। परम पू० गुरूदेव की परम कृपा का खजाना मानो बरस पड़ा जब आपने जबलपुर पधारकर अपने कर कमलों द्वारा २८ अक्टूबर ९३ की संध्या में इस आश्रम का उद्घाटन किया।

२९ अक्टूबर ९३ को प्रातः जब हम शिष्यगण गुरूदेव के सत्संग एवं भजनों का आनंद ले रहे थे तो गुरूदेव ने भजनों के छपवाने की चर्चा की और सहज भाव में ही शिवोम् वाणी भाग ४ को जबलपुर आश्रम से प्रकाशित करने की स्वीकृति दे दी। जब गुरुदेव से इस खंड के प्राक्कथन लिखने के लिए प्रार्थना की तो बड़े सरल भाव से यह कहते कि तुम लोग अच्छा लिख लेते हो इसे भी तुम लोग ही लिखो ? उनके आशीर्वचनों ने लेखनी में अचानक शब्दों की गढ़ने की क्षमता प्रदान की और मेरी कलम से "शिवोम् वाणी भाग ४" के लिए गुरुभाव स्वरूप में शब्दों की अविरलधारा प्रारंभ हो गई।

पू० गुरुदेव एक महान संत हैं जिन्होंने शक्तिपात परम्परा को समस्त संसार में प्रचारित की है तथा भविष्य में इसका विस्तार हो इस हेतु महान् सन्यासियों को शक्तिपात अधिकारी बनाकर देश- विदेशों में पदस्थ कर दिया है। सारे अधिकार देकर आपने रागद्वेष, मोह, माया, लोभ तथा इच्छाओं से परे अपने आप को कर लिया है। वे ब्रह्मस्वरूपा इस युग के महान सचेतक, चिंतक एवं रहस्यवादी कवि सिद्ध हुए हैं जिन्होंने २-३

वर्षों में ही लगभग १००० भजन, गजलें एवं उर्दू की शायरियाँ लिखकर हम संसारी जीवों के कल्याण मार्ग को प्रशस्त किया है।

आपने अपने भजनों में ज्ञान, कर्म एवं भक्ति की त्रिवेणी बहाई है जिसमें साधक स्नान करके अपने आपको भवसागर से पार उतरने का अधिकारी बना सकता है। आपकी पंजाबी एवं उर्दू की गजलों एवं भजनों में गुरू नानक की वाणी, भक्ति गीतों में मीरा बाई, दादू, दयालदास, कबीर एवं रस खान की छवि एवं आरती व गुरू भक्ति गीतों में परम प्रभु की झलक आत्म विभोर कर देती है। राग रागिनियों से ओतप्रोत भाषा आपके महान् संगीतज्ञ होने का जहाँ द्योतक है वहीं रहस्य एवं छायावाद के भजनों में गुरू, गुरू कृपा, जीवन, म्हत्य मानव कर्तव्य एवं भक्ति साधना के गूढ़ रहस्यों का वृहत समावेश है जिसे पढ़कर एवं सुनकर साधक चैतन्य शक्ति के प्रवेश को अपने अन्तस में गुरूकृपा से जाग्रत अनुभूत करने लगता है।

मैं विश्वास करता हूं इन भजनों द्वारा मानव अपने धार्मिक एवं आध्यात्मिक जीवन की उन्नति कर सकेगा एवं अपने व्यवहारिक जीवन में इन्हें समावेशित कर जनकल्याण एवं मानव कल्याण के मार्ग पर अग्रषित होगा।

जय गुरूदेव

मुरलीधर दुबे

अध्यक्ष

ता. २८-१२-९३

स्वामी शिवोम् तीर्थ गुरू

सुधा महायोग आश्रम जबलपर

विषय-सूची

क्र	नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
१	आरती	१	गुरुदेव नहीं	२५
२	गुरु कृपा जब	२	गुरुऐसे बलिहारी	२६
३	मेरा बालम मुझसे	३	गुरु सम जग में	२७
४	प्रभु नैनन माहीं	४	हे विष्णुतीर्थ	२८
५	राम ही मेरा	५	तीर्थ विष्णु प्रभु	२९
६	प्रभु मैं शरण	६	हो री सद्गुरु	३०
७	मैं मन में	७	वो समय भी	३१
८	झांक कर देखा	८	माया के फेर में	३२
९	मैं तो कब की	९	प्रभु नयनन माहीं	३३
१०	मेरा मन अकुलाए	१०	राम ही मेरा	३४
११	मैं तो दर्शन	१०	हरि भक्ति अनूप	३५
१२	लागी रे रामधुन	११	प्रेम का पेंडा	३६
१३	मैं हूं राम में	११	पंच विकार चोर	३७
१४	हे गोविन्द हे गोपाल	१२	सुख पूरक गई	३८
१५	आओ दुखिया की	१३	प्रभु तेरी मैं	३९
१६	नाम जपो उस	१४	मैं जगत में	४०
१७	हरि का नाम	१५	वासनाएँ कामनाएँ	४१
१८	निसदिन नाम जपे	१६	जा रहा हूं	४२
१९	राम का मधुर	१७	क्षण भंगुर शरीर	४३
२०	श्रीकृष्ण गोविन्द	१८	सफल जनम है	४४
२१	हम आये तेरे	१९	राम नाम बिन	४५
२२	जग से नेह	२०	प्रेम बिना प्रभु	४६
२३	प्रभु अपने रंग	२१	कठिन चढ़ाई तेरे	४७
२४	कृष्ण चरण मन	२२	हे मेरे बालमा	४८

५३	लोग कहें तीरथ	४९	६२		नयनन नींद	५८
५४	गुरु कृपांजन	५०	६३		मैं प्रेम प्रभु से	५९
५५	मेरे कलेजे में	५१	६४		जब प्रेम हृदय	६०
५६	विष्णुतीर्थ विष्णु तीर्थ	५२	६५		प्रीत की रीत	६१
५७	जब अवसर	५३	६६		जगत में जिन्दा	६२
५८	सब छूट यहीं	५४	६७		श्याम तू कैसी	६३
५९	कब है काली	५५	६८		माया ठगनी हो	६४
६०	आह भरूँ और	५६	६९		मोहे राम जपा	६५
६१	जब युवाओं को	५७	७०		मनवाक्यों जाये	६६

आरती

ॐ जय जय गुरूदेवा, स्वामी जय जय गुरूदेवा ।
पार करो भक्तों को, हरो कष्ट देवा ॥
द्वारा तुम्हारे ठाढ़े, विपदा प्रान हो ।
शरण में प्राए तुमरी, टेर सुनो देवा ।।
३. हम में जाग्रत हों कर, तम का नाश करो ।
मन निर्मलता पाए, अक्षय सुख देवा ।।
४. कार्य शीलता तेरी, पाप नाश करती ।
अन्तर्ज्ञान प्रकाशित, दिव्य मौन देवा ॥
५. तुम हो दीन दयालु, हम पातक भारी ।
करो अनुग्रह हम हैं, दीन हीन देवा ॥
६.सब जग छोड़ के आए, शरण तेरी मांगें ।
नहीं सहारा कोई, जाएं जहां देवा ।।
७.क्रियाशील हो करते, कर्म क्षीण सब ही ।
करत विवेक जाग्रत, सुख जीवन देवा ।।
८.पड़े हैं हम अंध्यारे, तुम ही रखवाले ।
स्वयं सिद्ध जो साधन, करो दान देवा ॥
९. तीर्थं शिवोम् पुकारे, तन चरणों माहीं ।
शरण पड़े दीनन की, हरो पीर देवा ॥

गुरु कृपा जब परगट होए

१. गुरू कृपा जब परगट होए, राम रतन मन माहीं ।

जनम जनम के कल्मिश काटे, मुक्त होए चिन माहीं ॥

२. गुरू सेवा करा, राम सिमर मन, गुरू का संग करीजे ।

सद्गुरू प्रभु को अनुभव कीना, तारे पल ही माहीं ।।

३. गुरू सेवा बिन मूरख मनवा, बना तू मूढ़ दहीजे ।

माया मोह मैं रहे फसत है, पड़े जगत के माहीं ॥

४. तीर्थं शिमोम् कृपा गुरूदेवा, राम नाम प्रगटाओ ।

तमातील मन हो परकाशित, ध्यान चरण के मांहीं ॥

निकला जाए निकला जाए

निकला जाए, निकला जाए, जीवन मेरा निकला जाए।

रहा मैं देखत भुड़ मुड़ जाऊं, जीवन मेरा निकला जाए ॥

कदम मेरा आगे को बढ़ता, मैं पीछे को देखत जाऊं ।

जाऊं कहां किधर को देखूं, जीवन मेरा निकला जाए ।।

पग पग मृत्यु प्रोर मैं बढ़ता, पर मैं देखन जात जगत को ।

नहीं गिरूं तो अचरज भारी, जोवन मेरा निकला जाए ।।

मृत्यु द्वारे श्रा पहुंचा मैं, पर मन में है जग की आशा ।

बेड़ा कैसे पार हो मेरा, जीवन मेरा निकला जाए ।।

मैं तो श्रायु वृथा गंवाई, जीवन का कुछ फल न पाया ।

अब तो समय निकल है जाता, जीवन मेरा निकला जाए ।।

तीर्थ शिवोम् हूं चितित मन में, अब क्या होगा कैसे होगा ।

अब तो होए कुछ न होए, जीवन मेरा निकला जाए ।

मेरा बालम मुझ से बिछुड़ गया।

१.मेरा बालम मुझ से बिछुड़ गया।

एक था अवसर हाथ में आया, वह भी बिरथा निकल गया।।

२.बालम बिछुड़े, युग युग बीते, भूल गई मैं प्रियतम को।

मोहित हुई जगत में ऐसी, ध्यान हृदय से उतर गया।।

३.जग के रंग मैं रंग गई ऐसी, जग का रूप ही धार लिया।

होश आया तो गरत पड़ी हूं, ध्यान प्रभु का भूल गया।।

४.अब तो बालम दीखत नाहीं, मन आशाओं में उलझा।

ऐसा मन कैसे मिल पाए, मिलन का अवसर चूक गया॥

५.मानुष जनम मिला था मोहे, प्रेम प्रभु का पाने को।

पर मैं रही जगत में उलझी, मानुष तन भी बीत गया।

६.तीर्थ शिवोम् मैं बड़ी अभागिन, दर्श प्रभु का मिला नहीं।

जीवन व्यर्थ गंवाया मैंने, यूं ही वह तो निकल गया।

कलावती

प्रभु नैनन माहीं छुपाय लियो ।

१. प्रभु नैनन माहीं छुपाय लियो ।

हरि को नयनन माहीं बिठाय, जग को दूर हटाय दियो ।।

२.प्रभु के बिना नहीं कुछ दीखत, जग भी हरि ही देखूं ।

प्रभु मेरे हरि के बीच न कोई, ता को ही अपनाय लियो ।।

३.इच्छा प्रभु ने पूरी कीनी, अपना रूप दिखाया ।

रूप दिखा अँखियन में बैठा, परदा नयन गिराय लियो ।।

४.अब तो अन्तर्ज्योति जागी, जगत भाव बिसराया ।

अन्तर में आनन्द समायो, दुख को मार भगाय दियो ।।

५.प्रेम समाया अन्तर ऐसा, द्वेष किसी से नाहीं ।

प्रभु बिना है नाहीं दूजा, भाव यही अपनाय लियो ।।

६. तीर्थ शिवोम् सुनो प्रभु मोरे, लगी रहूं चरणों में ।

ऐसा सुख निरन्तर दीजो, रूप तेरा मन भाय लियो ।।

राम ही मेरा प्रियतम प्यारा

१.राम ही मेरा प्रियतम प्यारा ।

राम बसत है हिरदय माहीं, राम मेरा रखवारा ॥

२.राम से नेह लगा है मन में, बदत रहत दिन राती ।

जहां देखूं तहां राम बिराजे, राम ही सिरनहारा ।।

३.राम ही बंधु, राम पति है, राम हो सब कुछ मेरा ।

राम बिना पल भर न बीते, राम मेरा आधारा ।।

४.राम नाम मेरे मन माहीं, चलत है नित्य निरन्तर ।

ऊठत बैठत राम जपूं मैं, रामहि करत विचारा ॥

५.राम प्रभु पत राखो मेरी, दासी हूं मैं तेरी ।

तुम बिन कोई नाहीं अपना, केवल राम हमारा ॥

६.किरपा राम बनाए रखो, तीर्थ शिवोम् शरण में ।

जुड़ी रहूं मैं तुमरे साथे, प्रेम हृदय अविकारा ।।

प्रभु मैं शरण तिहारी आया।

१.प्रभु मैं शरण तिहारी आया।

हानि लाभ सब छोड़ जगत में, दुख सब ही बिखराया।।

२.का के द्वारे जाऊं प्रभु जी, द्वारा तुम्हारा पकड़ा।

अब तो पड़ा तुमारी शरणी, त्याग जगत मैं आया॥

३. भाई बांधव कुटुम्ब कबीला, स्वारथ के सब साथी।

एक तुम्हीं हो मेरे प्रियतम, ना ही तुम घर आया॥

४.मैं याचक बन कर आया हूं, हर लो विपदा मोरी।

सर्व समर्थ हरिहर तुम हो, तुम ने जगत बनाया।।

५. हे प्रभु खोलो द्वार तुमारो, खड़ा शिवोम् पुकारे।

कहां जाऊं किस को मैं पूछूं, विनय करत हूं आया॥

मैं मन में, न जानूं मन की

१. मैं मन में, न जानूं मन की, तुम जानत हर मन की।

क्या चाहत हूं, क्या मांगत हूं, छुपी न तुम से मन की ।।

२. अन्तर्यामी घट घट व्यापक, तुम सर्वज्ञ विधाता।

मैं तो जान सकूं न तुम को, तुम जानत हर मन की ॥

३.आन पड़ा हूं द्वारे तुमरे, अपना लो, ठुकरा दो।

मैं तो हूं अब शरण तिहारी, तुम जानत हर मन की ॥

४.दीन हीन अज्ञानी बालक, साधन ज्ञान न जानूं।

एक सहारा तुम ही मेरे, तुम जानत हर मन की ॥

५. तीर्थं शिवोम् हे मेरे गुरूवर, करूं विनय तुम आगे।

अब तो मन को पीड़ा हर लो, तुम जानत हर मन की ॥

झांक कर देखा जो दिल में

१.झांक कर देखा जो दिल में, श्याम बैठा था वहां।
मुस्कराता देखता था, था सजा बैठा वहां ॥
२.वह प्रकट करता समाता, था जगत को बार बार
जगत के कण कण समाया, था सजा बैठा वहां ॥
३.राम शंकर रूप हैं जितने प्रभु धारण किए
थे वहां सब श्याम में ही, वह सजा बैठा वहां ।।
४.पार करता था वह अपने दीन भक्तन कर कृपा
था दयालु रूप उसका, वह सजा बैठा वहां ॥
५.था करे संहार दुष्टों का भी अपने क्रोध से
रूप था उसका अलौकिक, वह सजा बैठा वहां ।।
६.अव्यक्त होकर भी कन्हैया, था सगुण परकाशमान
था मधुर वंशी बजाता, वह सजा बैठा वहां ॥
७.नाद परगट हो रहा था, मधुर मुरली तान से
मोह लेता मन सभी का, वह सजा बैठा वहां ॥
८.था सगुण वह रूप उसका, वह बजा बंशी रहा
दृश्य परगट थे अनेकों, वह सजा बैठा वहां ॥
९.कृष्ण का दरबार था, पर था नहीं दरबार वह
कृष्ण ही दरबार बन कर भी, सजा बैठा वहां ॥
१०. कृष्ण आगे, कृष्ण पीछे, कृष्ण ही बस कृष्ण था
कृष्ण के ही रूप में भी, वह सजा बैठा वहां ।।
११. है विनय शिवओम् की, कृपा करो मेरे प्रभु
रूप तेरा मैं भी देखूं, तू सजा बैठा जहां ।।

मैं तो कब की पड़ी हूं सोए

१. मैं तो कब की पड़ी हूं सोए, आन जगाओ मोहे ।
मैं तो विषयन माहीं डूबो, आन बचाओ मोहे ।।
२.जग जानत अपने को जागा, माया माहीं सोया ।
ज्ञान होय तब जागा समझो, ज्ञान लखाओ मोहे ।।
३.तीर्थ शिवोम् शरण हूं तेरी, माया तम मिट जाए ।
तेरे रंग में डूब रहूं मैं, रंग चढ़ाओ मोहे ॥

मेरो मन अकुलाए रहयो है

१.मेरो मन अकुलाए रहयो है, प्रियतम टेर सुनो।
मैं रही पुकारत तोहे, मेरी अर्ज सुनो ॥
२. मेरा मन तुमरे संग राता, दूजो नाहीं भाए ।
मैं रही बुलावत तोहे, मेरी अर्ज सुनो ॥
३. अंग अंग में प्रेम समाया, रंग चढ़ी है न्यारा ।
मन लोचे है दर्शन ताई, मेरो अर्ज सुनो ॥
४. तीर्थ शिवोम् शरण में आई, दर्शन मोहे दीजो ।
मैं दुखयारी दर्शन बाझों, मेरी अर्ज सुनो ।।

मैं तो दर्शन मागूं तेरा ।

१. मैं तो दर्शन मागूं तेरा ।
२,और न चाहिए कुछ भी मोहे, एक अनुग्रह तेरा ॥
जग तो बड़ा लुभाना दीखत, भर्म ही सब है मन का ।
सुख तो तेरे संग बिराजे, सुख ही रूप है तेरा ॥
३. तीर्थं शिवोम् बिनती कर जोड़े, हूं मैं शरण तिहारी ।
हूं तो कुटिल अजान बालिका, दर्शन मांगू तेरा ॥

लागो रे लागी रे, लागी रे

१. लागो रे लागी रे, लागी रे, राम धुन मोहे लागो रे ।
मनवा तो अब मस्त बनो है, जगत वासना भागी रे ।।
२.जगत विषय विष दीखन लागे, अन्तर प्रेम है लागा ।
मन है मन ही में आनन्दित, प्रीत प्रभु की जागी रे ।।
३. सारा जगत प्रभु ही दीखत, दूजा तत्व है नाहीं
लीन हुई मैं प्रभु नाम में, अन्तर्ज्योति जागी रे ।।
४. तीर्थं शिवोम् है राम समाया, राम राम सब दीखे ।
मैं और तू का भाव मिटा है, दुविधा सब ही त्यागी रे ।।

मैं हूं राम में, राम है मुझ में

१. मैं हूं राम में, राम है मुझ में, कण कण राम समाया ।
पशु पक्षी और मानव दानव, राम ही रूप धराया ।।
२.राम ही घट घट व्याप रहा है, हर किरिया के माहीं ।
राम ही रूप धरे बहु भान्ति, माया जग भरमाया ।।
३.राम ही पालन करता जग का, वह ही भाव प्रगटाए ।
राम ही सुख फल है देता, राम ही मन हर्षाया ॥
४.राम नाम ही सारे जग को, सागर पार करावे ।
राम नाम अन्तर में जाग्रत, मन निर्मल कर पाया ।।६.
५.राम ही गुरू सखा है स्वामी, राम से ही सब नाते ।
अपना तो बस राम ही केवल, राम ही पार लंघाया ।।
६.तीर्थं शिवोम् सुनो रघुवीरा, शरण तुम्हारी मैं हूं ।
राम तुम्हारा एक भरोसा, राम मेरे मन भाया ।।

बागेश्री

हे गोविन्द हे गोपाल

१. हे गोविन्द हे गोपाल, आया शरण राखो लाज ।
आया हूं मैं तेरे द्वार काट डालो मेरा जाल ॥
२. करत हूं मैं तेरा गान, छोड़ जग के सारे काम ।
है जगत में नाहीं कोई, बहुत बुरो मेरा हाल ।।
३. कर्म चक्र माहीं पड़ा, विषयों ने मोहे घेरा ।
मारग न सूझे कोई, काट देयो आय काल ॥
४ मन से हीन मैं हुआ हूं, भोगों माहीं लीन हुआ ।
तन से भी मलीन हुआ, बिगड़ गई मोरी चाल ॥.
५. अब तो मैं हूं दुखी भया, जग प्रपंच अति ही भारी ।
तूने मन मोह लीनो, चाहिए न मोहे माल ॥
६. तीर्थ शिवोम् करत विनय, मैं हूं तेरी शरण पड़ा ।
अब की राख लेऊ, टेर सुनो नन्द लाल ।।

आओ दुखिया की टेर सुनो

१.आओ दुखिया की टेर सुनो, बांके नन्दलाला बनवारी ।
मैं खड़ी पुकारत तुम्हें रही, हे श्याम मुरारी गिरधारी ॥
२.आओ आओ अब ना जानो, पहले ही देर भई भारी ।
मुझ दुखिया पर अब तरस करो, हे श्याम मुरारी गिरधारी ॥
३. मैं तुम्हें निहारत रही प्रभु, जग माहीं मैं तो उलझ गई ।
आओ आओ रक्षा कीजो, हे श्याम मुरारी गिरधारी ॥
४.दिन रात निकलता जाए है, पर मैं देखूं न कहीं तुम्हें ।
आओ और दर्श दिखा जाओ, हे श्याम मुरारी गिरधारी !
५.अवगुण मेरे न देखो तुम, मैं तो अवगुण से भरी हुई ।
तू अपनी विरद संभाल प्रभु, हे श्याम मुरारी गिरधारी ॥
६. शिवोम् पुकारत मैं हारी, कब की हूं रस्ता देख रही ।
बस तेरा एक सहारा है, हे श्याम मुरारी गिरधारी ॥

नाम जपो उस ईश्वर का

१.नाम जपो उस ईश्वर का, जो सारा जग प्रगटाए रहा ।
नाम जो सुख होत घनेरा, अन्तर में वह छाय रहा ।।
२.अंग अंग में राम समाया, और न दूजा कोई भी ।
सर्व नियन्ता घट घट व्यापे, वह ही जग भरमाए रहा ।।
३.शरण में जाओ उसके भाई, वह ही है सुख का दाता ।
ताको शरण गए सुख उपजे, क्यों मन में अकुलाए रहा ।।
४.ज्ञान भक्ति सतसंगत पाओ, जो मारग साधन का है ।
विषयों में है भटकत भटकत, अपना समय गवाएं रहा ।।
५.अंतर्ज्योति जाग उठे, तब माया भ्रम है दूर हटे ।
दुविधा दूर हटे अन्तर की, मन में है सुख पाए रहा ।।
६. तीर्थं शिवोम् राम जप मनवा, तब होवे कल्याण तेरा ।
नाम सिमर ले राम सिमर ले, छिन छिन नाम जपाए जा ।।

हरि का नाम जपो भाई

१.हरि का नाम जपो भाई।

सतसंगत सद्गुरू की सेवा, पाप है देत नसाई ॥

२. हरि का नाम जपो दिनराती, कर संतन की सेवा।

आशा तृष्णा दूर हटे सब, मन में ही सुख पाई ॥

३. विषय भोग है मन भटकावत, मन चंचल हो जाता।

नाम जपे चंचलता जाए, मन आनन्द समाई ॥

४.नाम जपे का सुख घनेरा, मन भटकावत नाहीं।

सुख और दुख को सम कर देखे, क्रोध लोभ सब जाई ॥

५.मैं समझाऊं तुझ को मनवा, हरि सिमरन तू कीजे।

माया परदा तभी हटेगा, चिन्ता सब हो जाई ।।

६.तीर्थ शिवोम् जपो रे भाई, मैं समझाय रहया हूं।

आशा तृष्णा तभी मरेगी, जप ही राम मिलाई ।।

निसदिन नाम जपे तू भाई

१.निसदिन नाम जपे तू भाई ।

गुरू को शरण गहे तू मन में, राम नाम तिन लाई ।।

२.राम की भक्ति हो दृढ़ अन्तर, कर ले ध्यान निरन्तर ।

राम नाम का पकड़ सहारा, नाम प्रानन्द समाई ॥

३.राम प्रभु है दीन दयाला, करत कृपा जीवों पर ।

ता का नाम जपे दिन राती, विपदा सब मिट जाई ।।

४.रंग ले मन को प्रेम रंग में, यह है रंग अनूठा ।

ज्यों ज्यों रंग चढ़े प्रति गहरा, रंगारंग हुई जाई ।।

५.है शिवोम् प्रभु अपरम्पारा, ध्यान भजन तू कर ले ।

कट जाएँगे बधन सारे, प्रभु धाम तू पाई ।।

राम का नाम मधुर है भाई

१.राम का नाम मधुर है भाई ।

मनवा राम के रस में भीगा, नहीं कोई पछताई ॥

२.राम रसायन भीगा रह तू, अनंद हरि का पाए

पार करे भवसागर माहीं, हिरदय प्रेम समाई ।।

३.राम नाम भव बंधन काटे, है वह अपरम्पारा ।

ताकी शक्ति अनत अलौकिक मुक्ति देत मिलाई ।।

४.राम नाम हो एक सहारा, नित ही साथ रहे जो ।

हर दम बना रहत अभिमुख वह, माया मोह छुड़ाई ।।

५.तीर्थ शिवोम् भजन कर मनवा, राम हो सच्चा साथी ।

राम सिमर ले, राम सिमर ले, राम ही पार लवाई ।।

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी

१.श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा ।
शरण में आए हैं हम तुम्हारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा ।।
२.है डूबी जाती भंवर में नैया, नहीं भी कोई बचाने वाला ।
विपद में हम हैं अति ही भारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा ।।
३. तुम्हारे बिन कोई रखैया, बस तुम हो जो है खवैया ।
संभालो पतवार है आ हमारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा ।।
४.है डूबी जाती इसे बचाओ, कि विरद अपना तुम्हीं निभाओ ।
तुम्हारे दर पर हैं हम दुखारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा ।।
५.करो वेग हम को उबारने का, करो उपाय उतारने का ।
नहीं तो डूबे हैं हम मंझारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा ॥
६.पड़ा शिवोम् अब तुम्हारी चरणीं, उबारो मुझ को है ले के शरणी
तुम्हारे आगे विनय हमारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा ॥

हम आए तेरे द्वारे

१. हम आए तेरे द्वारे, प्रभु राखो लाज हमारी ।

हम पड़े हैं शरण तुम्हारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ॥

२. दीन हीन हम बालक तेरे, तुम को रहे पुकार दुखी हो ।

पड़ी विपद अति भारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ॥

३. जगत बड़ा ही दुखदायी है, कष्ट अनेकों है वह देता ।

वह बना है अत्याचारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ॥

४.कैसे छूटे इस माया से, मारग कोई न सूझ पाता ।

प्रभु सुन लो टेर हमारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ।।

५.कोई न तेरे बिन है अपना, कष्ट हरे जो कुछ भी हमरा ।

दीनों की कर रखवारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ।।

६. तीर्थं शिवोम् हमारे प्रभुजी, दुखी जीव हैं तुम्हें पुकारे

कर नैया पार हमारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ॥

जग से नेह कर तू नाहीं

१. जग से नेह कर तू नाहीं ।

कुछ भी साथ नहीं है चाले, पड़ा रहत है सब घर माहीं ।।

२.सिमरन राम बिना नहीं मुकती, धन परिवार से नाहीं ।

राम सिमर तू सतत् निरन्तर, तारेगा वह पल ही माहीं ।।

३.राम नाम की नाव पकड़ ले पार जो तू जाना चाहे ।

है जंजाल जहां आसक्ति, उलझ नहीं तू इन के माहीं ॥

४.सतसंगती संतन कर सेवा, हरि सो नेह लगा ले ।

हरि भजन का पकड़ सहारा, प्रेम हृदय के घर ही माहीं ।।

५. है यह आस जगत की मिथ्या, वक्त यह काम न आवे ।

आशा तृष्णा छोड़ तू जग की, चरण कमल हृदय के माहीं ॥

६. तीर्थं शिवोम वही है ज्ञानी, जा पर कृपा राम की होई ।

राम कृपा भरपूर लए है, प्रेम हरि का मन के माहीं ।।

प्रभु अपने रंग में रंग लेवे

१.प्रभु अपने रंग में रंग लेवे ।

जो है सिमरन राम का करता, अपने जैसा कर लेवे ॥

२. डूबत जात रही जो नैया, राम प्रभु के भक्तों की ।

पार करत है हाथ देय कर, नैया उनकी है खेवे ।।

३. क्षमाशील हो दयावन्त हो, पाप क्षमा उनके करता ।

अवगुण सारे देय मिटाए, निर्मल मन वह कर देवे ।।

४.मांगत भक्त जो अपने प्रभु से, मनो कामना पाते हैं ।

सुखमय जीवन उनका होता, आनन्दित वह भर देवे ।।

५. इच्छित दर्शन पावें प्रभु का, चरणों में वह नित रहते ।

प्रभु का रंग चढ़त है उन पर, रंगा रंग वह कर देवे ।।

६. तीर्थं शिवोम् सुनो भगवन्ता मैं भी तेरा सेवक हूं ।

लगा रहूं चरणों में नित ही, मन निर्मलता दे देवे ॥

कृष्ण चरण मन लागा

१.कृष्ण चरण मन लागा ।

कृष्ण बसा है मन के माहीं, अन्तर्मन में जागा ।।

२.कृष्ण ही दीखत, कृष्ण सुनत मैं, कृष्ण ही सर्व समाया ।

कृष्ण रूप ही सारा जग है, कृष्ण चररण मन पागा ॥

३.कृष्ण की वंशी नाद करत है, मधुर अति मन मोहक ।

गोपिन सारी नाद बंधी है, बंशी में मन लागा ।।

४.हिरदय कोमल माखन नाईं, कृष्ण है लेत चुराय ।

मन में तब बस कृष्ण बसे हैं, कृष्ण में ही मन लागा ।।

५.काय करूं सुध आवत नाहीं, कृष्ण चरण में जाए ।

सुख तो कृष्ण चरण के माहीं, चरणों में मन लागा ॥

६.तीर्थ शिवोम् हे कृष्ण कन्हाई, शरण तुम्हारी आई ।

शरण में राखो शरण पड़ा हूं, तुम में ही मन लागा ॥

मैं कृष्ण ही कृष्ण पुकारूं ।

१.मैं कृष्ण ही कृष्ण पुकारूं ।

कृष्ण का ध्यान ही धारूँ मन में, कृष्ण का नाम उचारूं ।।

२. मन तो मोरा कृष्ण में लागा, दूजा नाहीं भावे ।

जग से लेना देना क्या है, कृष्ण ही मन में धारूं ।।

३. कृष्ण की लीला, कृष्ण की मुरली, मन में प्रेम भरे है ।

ताही लागा है मन मोरा, मैं गुण नाम विचारूं ।।

४. मन में, तन में कृष्ण समाया, कृष्ण ही घट घट व्यापे ।

मैं मतवारी प्रेम कृष्ण की, ता पर मन मैं वारूं ।।

५. कृष्ण करत उद्धार जगत का, सागर पार करावे ।

दीन दयाला कृष्ण गोपाला, कृष्ण ही कृष्ण उचारूं ।।

६.तीर्थं शिवोम् है कृष्ण कन्हाई, किरपा मो पर राखो ।

तेरा प्रेम मेरे मन माहीं, तन, मन तुझ पर वारूं ॥

जब से चरणीं सद्‌गुरू आया

१.जब से चरणीं सद्‌गुरू आया, और नहीं मन भाया ।
मन है भया आनन्दित ऐसा, चरणों में सुख पाया ।।
२.कई मारग हैं, देव अनेकों, कहते बहुत उपाय ।
मेरे मन तो सद्‌गुरू भाया, मिथ्या सारी माया ।।
३. सद्‌गुरू देव है जगत रचाया, करत वही प्रतिपाला ।
सब देवों में वह ही व्यापे, तत्व यही मैं पाया ।।
४.इधर उधर मनवा क्यों जाये, गुरू का नाम अराधे ।
लगा रहे गुरू चरणों माहीं, यही है मन भाया ॥
५. तीर्थं शिवोम् मेरे गुरूदेवा, चेतन ब्रह्म सरूपा ।
ता ही में मन रमा रहत है, गुरूदेव मन भाया ॥

गुरूदेव नहीं तुमरे बिन कोई

१. गुरूदेव नहीं तुमरे बिन कोई

का के दर करूं पुकार, सुनत नहीं कोई

२.देख भाल सारा जगत, अन्त आई तुमरी शरण

दीजो नाहीं मोहे छोड़, मेरो नहीं कोई

३. विषयों ने तंग कीनो, जगत मोह भंग कीनो

अब सहारा नाहीं होई, पूछता न कोई

४. हूं शिवोम् विनय करत, लाज त्याग आई शरण

चरण हूं तुमार पड़त, दूसरो न कोई

गुरू ऐसे बलिहारी जाऊं

१.गुरू ऐसे बलिहारी जाऊं ।

रहत निरन्तर आतम सुख में, माथे चरण लगाऊं ॥

२. नहीं कहत जो ध्यान करन को, प्राण न रोकन कहता ।

ज्ञान अवस्था रहत निरन्तर, ता के मंगल गाऊं ॥।

३.जप तप तीरथ गौण भए जा, शक्ति क्रिया निहारत ।

सर्व जगत अम्बा ही दीखत, ता के गुण मैं गाऊं ॥

४.छोड़े और छुड़ाए जग सों, मोह बना जो भारी ।

आतम लाभ कमावे अन्तर, मन में ताही बिठाऊँ ॥

५. मार्ग बताए सहज क्रिया का, अन्तर जीव समाया ।

करत सदा ही मंगल जग का, चरण ता ही मन लाऊं ॥

६. तीर्थं शिवोम् मैं ऐसे सद्गुरू, गुरू कृपा से पाया ।

जय हो जय हो सद्गुरू देवा, मगन आनन्द रहाऊं ॥

गुरू सम जग में दूजा नाहीं

१. गुरू सम जग में दूजा नाहीं
बंधन देत छुड़ाए अन्तर, करे सो दूजा नाहीं ।।
२.न कुछ लेत जीव से वह है, ता कल्याण करत है
जग कल्यारण का भाव है ऐसा, और किस पर नाहीं
३. जग में रहे अकर्ता हो कर, सम दृष्टि सब माहीं
हो धनवान या निर्धन कोई, ता में अन्तर नाहीं
४. वैरी मित्र से एक समाना, प्रेम करत है सब सों
हृदय उदार सुआमी सद्गुरू, वह डोलत है नाहीं
५. प्रभु से मिला रहे वह हरदम, अन्तर दृष्टि ऐसी
अन्तर बाहर एको देखे, को ऐसा जग नाहीं
६. तीर्थं शिवोम् कृपा गुरू देवा, बालक हूं मैं तेरा
किरपा दृष्टि राखो मो पर, रक्षक और है नाहीं

हे विष्णु तीर्थ प्रभु देवा

१. हे विष्णु तीर्थ प्रभु देवा, हम शरण तेरी हैं देवा।
हम उलझ रहे जग माहीं, काढ़ो हम को हे देवा ।।
२.मन बड़ा ही अत्याचारी, दुख देत अति ही भारी।
हम आए शरण तिहारी, काटो कलेश हे देवा ।।
३.मन हमारा मैल भरा है, विषयों के माहीं सना है।
वह जग में बहुत रमा है, समझाओ मन हे देवा ।।
४.मन चंचल बहुत हुआ है, दुखिया भी बहुत हुआ है।
भोगों में फंसा हुआ है, अब सुनो टेर हे देवा ।।
५.मन सुनता नहीं किसी की, न सीख ही लेत किसी की।
समझाए उसको हारे, कर कृपा हमीं पर देवा ।।
६.अब किस के आगे रोए, किसको जा हाल सुनाएं।
न कोई न सुननेहारा, इक तुम ही हो गुरूदेवा ।।
७. शिवोम् है तुम्हें बुलाए, मन माहीं वह अकुलाए।
इस मन से पिण्ड छुड़ाप्रो, हो कृपाशील तुम देवा ॥

गुरू बाण चलाया कैसा है

१.गुरू बाण चलाया कैसा है, मस्त किया हिरदय बींधा ।

हे दृष्टि बदल गई मेरी, उपकार किया जीवन सींचा ।।

२.चंचलता मन की क्षीण हुई, और विषय विहीन हुआ मनवा ।

आशा तृष्णा सब लीन हुई, है विषयों को बाहर खींचा ॥

३. गुरू बाण लगा हिरदय माहीं, हिरदय का भाव बदल डाला ।

मन की सीमाएं सब टूटीं, है भोगों को मन से खींचा ।।

४.मेरा तेरा सब ही छूटा, अब आतमराम सभी दिखता ।

गुरूदेव कृपा मो पर ऐसी, कर दीना वासना को नीचा ॥

५.शिव ओम् तुम्हारी जय गुरूवर, है नवजीवन परदान किया ।

अब मन आनन्द समाया है, जीवन फुलवाड़ी को सींचा ॥

मालकोंस

तीर्थ विष्णु प्रभु अन्तर्यामी

१. तीर्थ विष्णु प्रभु अन्तर्यामी, कृपावन्त हो जीवों पर।
तुम हो अनत दया के सागर, करो अनुग्रह जीवों पर ।।
२.साधन निष्ठ ज्ञान सागर हो, बहुमुखी प्रतिभा स्वामी।
दया भाव की वर्षा कर दो, हम अज्ञानी जीवों पर ॥
३. शक्तिमान हो, विष्णु रूप हो, माया से हो परे तुमीं।
भाव हमारे निर्मल कर दो, कर दो वर्षा जीवों पर ॥
४. तीर्थ रूप हो निरहंकारी, ज्ञानी ध्यानी सभी तुमीं।
मन हमारा मलीन है चंचल, निर्मल दान हो जीवों पर ॥
शरण में आए तुमरी हम हैं, जग से बहुत दुखी हो कर।
आशा तृष्णा दूर करो सब, कृपा करो हम जीवों पर ॥
६. तीर्थं शिवोम् विनय गुरू आगे, विनय सुनो प्रभु दुखियों की।
चरण पड़े हैं शरण में आए, दया दृष्टि हो जीवों पर ॥

हो री ऐसा सद्गुरू होए

१. हो री ऐसा सद्गुरू होए।

प्रभु प्रापत हो कीना जा ने, पूरण ज्ञानी होए।

२.ता के नाम दान से मेरी, अन्तर शक्ति जागे।

अन्तर किरिया करे अलौकिक, मन निर्मल हुई जाए।।

३. मन शोतल हो, तन शीतल हो, भाव भक्ति मन जागे।

थिरता अन्तर हो परकाशित, मन चंचलता जाए॥

४. तड़प रही मैं प्रभु के कारण, कृपा करेंगे सोई।

भगवद किरपा एक भरोसा, सद्गुरू प्यारा आए॥

५. सद्गुरू मेरे मन सुख होए, दुख सकल ही भागे।

सद्गुरू कृपा अनोखी वस्तु, भव बंधन कट जाए॥

६. तीर्थ शिवोम् कृपा गुरू देवा, तुमरी गति है न्यारी।

करत कृपा शरणागत पर हो, विपदा सकल हटाए।।

वह समय भी कैसा होगा

१.वह समय भी कैसा होगा, जब जगत से जाऊंगा ।

रोता सिसकता भरमता, वापिस नहीं आ पाऊंगा ॥

२.बंधु बाधव जो भी हैं, जो कुछ कमाया मैं यहां ।

सब कुछ धरा यूं ही रहेंगा, न साथ कुछ ले पाऊंगा ।।

३.मैं सोचता मन में हूं अब, आया तू क्यों इस जगत में ।

कर के तमाशा चल दिया, पर यह भी न ले जाऊंगा ।।

४. अब सामना यमदूत से है, क्या ताड़ना देगा मुझे ।

देखना क्या क्या पड़ेगा, सहन कर न पाऊंगा ।।

५. रोते बिलखते ही रहेंगे, भाई, पत्नि और सब ।

मैं तो जाऊं छोड़ सब को, देख यह न पाऊंगा ।।

६.शिव ओम् रोता ही रहूंगा, और मर जाऊंगा मैं ।

देखते मुड़ मुड़ जगत को, जगत से उठ जाऊंगा ।।

माया के फेर में जीव पड़ा

१.माया के फेर में जीव पड़ा, मृत्यु न आती याद उसे ।
ज्यों समय निकलता जाता है, होती घबराहट तभी उसे ।।
२.यह जगत तो एक खिलौना है, खेला और तोड़ दिया उसको ।
जब मन इसमें है रम जाता, होता है कष्ट भी तभी उसे ।।
३.जो मोह युक्त हो कर्म करे, वह बंधन में पड़ जाता है ।
तब मन उसका होकर दूषित दुखदायक बनता तभी उसे ।।
४.है जीव भी घूमे माया में, ज्यों फिरती माला हाथों में ।
जब जनम मरण का चक्र चले, अनुभव होता दुख तभी उसे ।।
५.है सोचन लागे जीव तभी, जब अन्त समय सिर पर आया ।
मन में सोचे वह कर्मों को, जो विचलित करते तभी उसे ।।
६.है जीव तड़पता पछताता, पर कुछ भी होत नहीं अब तो ।
है मृत्यु खड़ी बुलाए रही, भयभीत है करती तभी उसे ।।
७.शिव ओम् जो समझे जीव तभी, जब तक है उसके पास समय ।
जब मृत्यु द्वारे आन खड़ी, है करती ताड़न तभी उसे ।।

कलावती

प्रभु नैनन माहीं छुपाय लियो

१. प्रभु नैनन माहीं छुपाय लियो।

हरि को नयनन माहीं बिठाय, जग को दूर हटाय दियो।।

२. प्रभु के बिना नहीं कुछ दीखत, जग भी हरि ही देखूं।

मेरे हरि के बीच न कोई, ता को ही अपनाय लियो।।

३.इच्छा प्रभु ने पूरी कीनी, अपना रूप दिखाया।

रूप दिखा अँखियन में बैठा, परदा नयन गिराय लियो।।

४.अब तो अन्तर्ज्योति जागी, जगत भाव बिसराया।

अन्तर में आनन्द समायो, दुख को मार भगाय दियो।।

५.प्रेम समाया अन्तर ऐसा, द्वेष किसी से नाहीं।

प्रभु बिना है नाहीं दूजा, भाव यही अपनाय लियो।

६. तीर्थं शिवोम् सुनो प्रभु मोरे, लगी रहूं चरणों में।

ऐसा सुख निरन्तर दीजो, रूप तेरा मन भाय लियो।

राम ही मेरा प्रियतम प्यारा

१.राम ही मेरा प्रियतम प्यारा ।

राम बसत है हिरदय माहीं, राम मेरा रखवारा ॥

२.राम से नेह लगा है मन में, बदत रहत दिन राती ।

जहां देखूं तहां राम विराजे, राम ही सिरनहारा ।।

३.राम ही बंधु, राम पति है, राम ही सब कुछ मेरा ।

राम बिना पल भर न बीते, राम मेरा आधारा ॥

४.राम नाम मेरे मन माहीं, चलत है नित्य निरन्तर ।

ऊठत बैठत राम जपं मैं, रामहि करत विचारा ॥

५.राम प्रभु पत राखो मेरी, दासी हूं मैं तेरी ।

तुम बिन कोई नाहीं अपना, केवल राम हमारा ॥

६.किरपा राम बनाए राखो, तीर्थं शिवोम् शरण में ।

जुड़ी रहूं मैं तुमरे साथ, प्रेम हृदय अविकारा ॥

प्रभु तेरी मैं सार न जानी

१. प्रभु तेरी मैं सार न जानी ।

दिया शरीर भजन के ताईं, पर मैं बात न मानी ॥

२.रहा करत अभिमान बहुत मैं, किसे न कुछ भी समझा ।

अपने ही हठ अड़ा रहा मैं, अपने मन की ठानी ॥

३.काम क्रोध में होकर अंधा, कर्म किए बहुतेरे ।

धर्म अधर्म न सोचा कुछ भी, अपनी ही की हानी ॥

४. हे परमेश्वर दीन दयाला, रखवाला तू सबका ।

मेरी विपद हरो अब प्रभुजी, तुम हो गुण के खानी ॥

५.जिस पर तेरी किरपा होवे, भव सागर तर जाता ।

जिधर से अपने मुंह को मोड़ो, वह मांगत न पानी ।।

६. तीर्थ शिवोम् विनय कर जोड़े, अपना विरद संभालो ।

पड़ा रहूं तेरे चरणों में, रहूं न मैं अभिमानी ॥

मैं जगत में करत व्यौहार

१.मैं जगत में करत व्यौहार, मोह व्यापे नहीं मोहे ।

मुझ पर है तेरी कृपा, जगत बांधे नहीं मोहे ।।

२.जगत बुलाए और फंसाए, पाओं में रोड़े अटकाए ।

यह शक्ति प्रभु है तेरी, जगत बांधे नहीं मोहे ॥

३.मैं प्रसन्न अतीव सुखारी, तेरे चरणों की बलिहारी ।

मैं शरण लई है तेरी, जगत बांधे नहीं मोहे ॥

४.तन मन सौंप दिया प्रभु तोहे, तेरी इच्छा से जो होए ।

इक आस लगी है तेरी, जगत बांधे नहीं मोहे ॥

५.जगत पसारा त्यागा सारा, मन तो दिया तुम्हें हैं सारा ।

अब पकड़ी बांह है तेरी, जगत बांध नहीं मोहे ॥

६.तीर्थ शिवोम् तेरी मैं प्रियतम, दूजे मनवा जाए कैसे ।

मैं बनी पुजारिन तेरी, जगत बांधे नहीं मोहे ।।

वासनाएं कामनाएं सब

१.वासनाएं कामनाएं सब तेरे चरणों में हैं।
जगत से लेना मुझे क्या, अब तुम्हीं से काम है।।
२.तुम बुलाओ, न बुलाओ, मैं तो तेरा हो गया।
अब नहीं कुछ काम बाकी, अब तुम्हीं से काम है।।
३.भागता फिरता जगत में, हो के बेसुध मैं रहा।
बेसुधी, न सावधानी, अब तुम्हीं से काम है।।
४.ऐ मेरे प्रियतम कृपाकर, तेरी शरण हूं मैं पड़ा।
जगत से लेना न देना, अब तुम्हीं से काम है।
५.अपने मन में रख मुझे, संजोय कर संभाल कर।
मैं तेरा अपना ही चाकर, अब तुम्हीं से काम है।।
६. है विनय शिव ओम् की, मुझ को भुला देना नहीं।
अब मैं तेरा हो चुका हूं, अब तुम्हीं से काम है।।

जा रहा हूं, जा रहा हूं

१. जा रहा हूं, जा रहा हू, जा रहा हूं मैं ।

घर पराया छोड़ कर, घर जा रहा हूं मैं ।।

२.अब तक जगत को अपना ही, घर मानता रहा ।

अब ज्ञान घर का हो गया, घर जा रहा हूं मैं ।।

३.मन का ही मर्म , बुद्धि पर है परदा डालता ।

अब मर्म जब है उठ गया, घर जा रहा हूं मैं ।।

४.अपने ही घर में सब सुखी, आनन्द भी वहीं ।

आनन्द मगन हो चला, घर जा रहा हूं मैं ।।

५.अपना जो घर है घर वही, दूजे का घर न घर ।

अपने ही घर को जान कर, घर जा रहा हूं मैं ।।

६.शिव ओम् अब तू हो सुखी, घर अपने कर तू घर ।

घर मेरा मुझ को मिल गया, घर जा रहा हूं मैं ।।

क्षण भंगुर शरीर का स्वामी

१. क्षण भंगुर शरीर का स्वामी, कर अभिमान रहा।
जा शरीर अपवित्र है अन्दर, करत गुमान रहा ।।
२.यह शरीर दीखत है सबको, फिर विलीन हो जाता।
है अनित्य यह असत् बना है, है अनजान महा ।।
३.जा स्वामी यह जनम है दीना, उसे है भूले बैठा।
सिमरन कर ले नाम प्रभु का, काटे विपद महा ॥
४.हे मूरख तू उसे भुलाया, जो तेरा नित साथी।
कभी न छोड़े इस दुनिया में, तुम को जहां तहां ॥
५.तीर्थं शिवोम समझ मन मूरख, तू पापी अनजाना।
तेरी शक्ति है कुछ नाहीं, मिथ्या गर्व करा ।।

सफल जनम है उस मानुष का

१.सफल जनम है उस मानुष का, जो राम से नेह लगाए।
राम को केवल अपना समझे, राम ही के गुण गाए ।।
२.प्राप्त उसे ही फल जीवन का, मुक्त जो इस को करता।
आतम भाव प्रकट है उसमें, राम ही राम कमाए ।।
३.प्रेम है जा का गुरू चरण में, बल बुद्धि वह पाता।
राम भजन हो नित्य निरन्तर, क्यों मन वह भटकाए ।।
४.बार बार न जनम है ताका, कर्म विकार न मन में।
आतम राम सदा परकाशित, वह फिर क्यों पछताए ।।
५.परमातम की कृपा है जा पर, सन्तन सेवा करता।
कर सतसंग मिले परमारथ, फिर क्यों गोते खाएं ।।
६.तीर्थ शिवोम कृपा भगवन्ता, शरण तुम्हारी आया।
ऐसा सन्त मिला दो मोहे, कृपा वृष्टि बरसाए ।।

राम नाम बिन जीवन बीत गयो

१.राम नाम बिन जीवन बीत गयो ।

भोग विषय में मन को दीनो, न कुछ समझ पयो ।।

२.खेल विलास में मन लिपटाया, मद में चूर भयो ।

भला बुरा कुछ चीह्नत नाहीं, विषयन माहीं पयो ।।

३.काम क्रोध मन लोभ जगायो, गहरे कूप पयो ।

भक्ति ज्ञान विवेक न जान्यो, अंधा मूढ़ भयो ।।

४.तीर्थं शिवोम है जीवन बीता, न गुरू शरण गयो ।

रोय रोय सिर धुनि पछताए, न कुछ हाथ पयो ।।

प्रेम बिना प्रभु कृपा न होई

१. प्रेम बिना प्रभु कृपा न होई।

प्रेम बिना कछु हाथ न आवे, नहीं प्रियतम दर्शाई ॥

२. प्रेम अगन में मन का मैला, सब जल भस्म हुई जावे।

प्रेम चिंगारी मन आलोकित, आनन्दित हुई जाई ।।

३. प्रेम हि शरण पड़े प्रभु केरी, हौमे गलित हो जावे।

प्रेम बाढ़ में सारा कचरा, इक दम ही धुल जाई ।।

४.प्रेम स्वरूप प्रभु प्रियतम का, प्रेम ही सों वह रीझे।

प्रेम की आशा करे जगत सों, प्रेम ही ता मन भाई ॥

५.प्रेम भाव में भीगे नयना, पाप सभी धुल जावें।

मन निर्मल में प्रेम प्रकाशित, प्रेम में प्रेम समाई ।।

६. तीर्थं शिवोम् हे दीनदयाला, गुरू पूरे परमेश्वर।

प्रेम दान मोहे प्रभु दीजो, प्रेम हुई जाई ।।

कठिन चढ़ाई तेरे घर की

१.कठिन चढ़ाई तेरे घर की, मुझ से चढ़ा न जाए।

जग बंधन में जकड़ रहा हूं, मुझ से हटा न जाए॥

२.अन्तर हो कर दूर बसा तू, गुप्त हुआ तू बैठा।

कैसे पहुचें द्वारे तुमरे, मुझ से रहा न जाए।।

३.कहते जग से हटना पड़ता, तभी तुम्हीं तक पहुचें।

वह तो छूटत नाहीं मुझ से, मुश्किल कहा न जाए।

४.बहुत जतन है कीना मैंने, सफल हुआ मैं नाहीं।

बिना कृपा हे तेरी प्रभुजी, पार हुआ न जाए।।

५.मैं आया हूं शरण तिहारी, किरपा मुझ यह राखो।

पहुंच सकूं मैं द्वारे तुमरे, तुम बिन रहा न जाए।।

६. तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, मैं न आय सकूं जो।

नीचे आ कर दर्शन दीजो, मन शीतल हो जाए॥

हे मेरे बालमा, मान भी मान जा

१. हे मेरे बालमा, मान भी मान जा।

तेरे पैंया पड़ूँ मैं सजना, मान भी मान जा।।

२.कसम तुझको प्यार मेरे की, मेरे मन की आशाओं की।

तेरा तुझ को ही है वासता, मान भी मान जा॥

३.मैं रिझाएं मनाए रही हूं, तुम तो अकड़े रहे हर तरह।

अब अकड़ छोड़ कर मान जा, मान भी मान जा।।

४.मेरी हालत बुरी हो रही, हर दम मैं, बैचैन बनी हूं।

तुझे पल पल मेरा वासता, मान भी मान जा।।

५.आशाओं में बैठा है तू, अरमानों का सिंधु है तू।

तेरे बिना कोई न अपना, मान भी मान जा।।

६.मैं तेरे ही सन्मुख खड़ी, तेरे पाओं पह हूं पड़ी।

छोड़ तुम्हें न जाऊं कहीं, मान भी मान जा॥

मैं पी संग रास रचाऊंगी

१. मैं पी संग रास रचाऊंगी ।
पीय मेरा है दिव्य अलौकिक, ताही में रम जाऊंगी ॥
२.पी मेरा सुख रूप है ऐसा, जा में दुख है नाहीं ।
गहर गम्भीरा अलख अनन्ता, ता ही के गुण गाऊंगी ॥
३.प्रियतम मेरा सुख बरसाए, सुख ही सुख कर देता ।
मैं भी भीग सुखी हुई जाऊं, सुख में डूबी जाऊंगी ॥
४. प्रेम का रंग पिया छिटकाए, प्रेम रंगा सब होय ।
प्रेम के रंग में मैं भी रंग कर, पिय प्रेमी बन जाऊंगी ।।
५.सुख है पिय की सेज अनन्ता, जग बिसरत है जाता ।
पी को गले लगा कर मैं तो, पी में ही मिल जाऊंगी ।।
६. तीर्थं शिवोम् पिया सुख ऐसा, जैसा जग में नाहीं ।
नाचत नाचत पी संग मैं तो, न ही मिन्न रहाऊंगी ॥

मोहे लागा प्रेम का बाण सखी

१. मोहे लागा प्रेम का बाण सखी ।

चित्त रंगा अनुराग में अब है, हो गई मैं परवान सखी ॥

२.मन मतवाला कृष्ण प्रेम का, विषयन रस है नाहीं ।

प्रेम गली में घर है कीना, प्रेम लगा है मान सखी ।।

३.अब तो मनवा कृष्ण हि लागा, कृष्ण ही मन को भावे

कृष्ण बिना सारा जग फीका, कृष्ण ही है मन भान सखी ।।

४. तीर्थ शिवोम् हे कृष्ण कन्हाई, शरण तुम्हारी आई ।

तुमरे संग ही रास रचाऊं, आई यह मैं मान सखी ॥

लोग कहें तीरथ जावन को

१.लोग कहें तीरथ जावन को, मैं गुरू तीरथ पाया ।

जिस ने तीरथ अन्दर खोला, मन में ही सुख पाया ॥

२. ब्रह्मा, विष्णु और महेश, तीनों उस तीरथ में ।

मल मल न्हाऊं अन्तर तीरथ, तीर्थ गुरू मन भाया ॥

३. विष्णु तीर्थ ही तीर्थ रूप हैं, अन्तर तीरथ परगट ।

अन्तर तीरथ छोड़ क्यों भटकत, काहे मन भरमाया ॥

४. तीर्थ शिवोम् कृपा गुरूदेवा, मन चरणों में लागे ।

विष्णु तीर्थ अन्तर परकाशित, अन्तर आनन्द पाया ॥

गुरू कृपांजन नैनन दीजो

१. गुरू कृपांजन नैनन दीजो, अन्तर दृष्टि खोले ।
माया दूर हटे या मन सों, चेतन में ही डोले ।।
२. चेतन ही सर्वत्र समाना, बिन चेतन न कोई ।
चेतन चेतन ही सब दीखत, राम राम मुख बोले ।।
३.सकल विकार विनाश होत हैं, चिन्ता नाहीं मन में ।
चिदाकाश में विचरण करता, उड़ता बिन पर तोले ।।
४.तीर्थ शिवोम् कृपा गुरू देवा, जल किरपा बरसा दो ।
राम ही सब जग व्यापक दीखे, गांठ दो मन की खोले

मेरे कलेजड़ें में तीर लगा सजनी

१.मेरे कलेजड़ें में तीर लगा सजनी ।

सद्गुरूदेव कृपा की मो पर तड़पत जात हूं मैं सजनी ॥

२.ठौर ठौर पिया को देखूं, नयनन प्रेम समाया ।

अब तो प्रिय बिन इक पल नाहीं, सहन भी मो को है सजनी ॥

३. हर दम पिय मेरे संग बिराजे, छोड़त नाहीं पत भी ।

अंखियां न थाके पिय दर्शन, बावरी मैं तो भई सजनी ॥

४.तीर्थ शिवोम् यह मिलन पिया का, गुरु किरपा से पाया ।

मनवा हरदम मस्त बनो है, देखत हरदम पी सजनी ॥

विष्णु तीर्थम् विष्णु तीर्थम्

१. विष्णु तीर्थम् विष्णु तीर्थम् विष्णु तीर्थम् बोले जा ।

जय गुरूदेवा जय गुरूदेवा, जय गुरूदेवा बोले जा ।।

२.विष्णु तीर्थ है बड़े कृपालु, कृपा दृष्टि सब पर करते ।

गुरूदेव की डोर पकड़ कर, विष्णु तीर्थम् बोले जा ।।

३.जग में जीव है सुख दुख पाता, अनुभव होत आनन्द नहीं ।

देत दिखाए अन्तर सुख वह, विष्णु तीर्थम् बोले जा ।।

४.विष्णु तीर्थ चैतन्य सुआमी, चेतन चेतन कर देते ।

चेतन का आनन्द लूटता, विष्णु तीर्थम् बोले जा ।।

५.विष्णु तीर्थ चेतन्य विराजं अनुभव देते भक्तों को ।

राम नाम की लूट मची है, विष्णु तीर्थम् बोले जा ।।

६.. विष्णु तीर्थ है प्रकट प्रकाशित, जीव जो अनुभव कर लेता ।

विष्णु तीर्थ है घट घट माहीं, विष्णु तीर्थम वोले जा ॥

७ विष्णु तीर्थ हैं तीर्थ स्वरूपा, पापों को वह धो देते ।

स्नान तीर्थ तू कर ले मनवा, विष्णु तीर्थम, बोले जा ।।

८.तीर्थं शिवोम मेरे गुरूदेवा, आया शरण तुम्हारी हूं ।

निर्मल मन मेरा भी कर दो, विष्णु तीर्थम, बोले जा ॥

जब अवसर बीतत है जाता

१.जब अवसर बीतत है जाता, फिर मन है रोता पछताता।
पर पछताए कुछ होत नहीं, जब समय निकल ही है जाता॥
२. मन पड़ा रहत है दुविधा में, पर आयु बीत चली सारी।
है समझ न आए क्या करना, हाथों से समय निकल जाता।।
३. मैं रमा रहा विषयन माहीं, कुछ समझा नहीं, न समझाया।
समझन की बेला बीत चली, यमराज उतरे आ जाता।।
४.अब शिथिल हुआ है देह मेरा, कुछ भी अब मुझ से होत नहीं।
अब क्या पछताए होत भला, करने का समय निकल जाता।।
५.अब तीरथ तीरथ घूम रहा, प्रभु दर्शन हुआ न कहीं मुझे।
किस को पूछूं और जाऊं कहां, खोजन का समय निकल जाता॥
६. गुरूदेव तुम्हारे द्वारे पर, सिर रख के विनय करत हूं मैं।
तुम कृपाशील करूणा सागर, मारग कुछ भी न दिख पाता।।
७. शिव ओम तो आयु बीत गई, क्षण क्षण बीती पल पल बीती।
अब शरण तुम्हारी आन पड़ा, है विरथा समय निकल जाता।

सब छूट यहीं रह जाना है

१.सब छूट यहीं रह जाना है ।

भाई बांधव कुटुम्ब कबीला, कोई साथ न जाना है ।।

२. ऊचे ऊंचे महल बनावे, धन सम्पत्ति जोड़े ।

यश अपयश के कारण लागा, संग नहीं कुछ जाना है ।।

३.राम भुलाए, जग को धाए, धर्म अधर्म न जाने ।

छोड़ यहीं सब चला मुसाफिर, अन्त रहा पछताना है ।।

४.मैं और मेरा तेरा करते, उमर चली विरथा जाए ।

मेरा तेरा साथ न चाले, अन्त अकेला जाना है ।।

५.क्यों तू भूला प्रियतम प्यारा, जो तेरा नित का साथी ।

कभी न छोड़े तुझे अकेला, संग उसे ही जाना है ॥

६. तीर्थं शिवोम समझ मन मूरख, क्यों तू समय गवाता है ।

हीरा जनम अमोलक पाया, बार बार नहीं पाना है ।।

कब है काली रात बीतत

१.कब है काली रात बीतत, होगा कभी सवेरा ।

बीता जाए जुबना मोरा, मिलेगा प्रियतम मेरा ।।

२. माया काली रात डसे है, पल भर चैन है नाहीं ।

प्रियतम बिन उजियाला नाहीं, छूटे गहन अंधेरा ।।

३.कटा वियोग में जुबना मोरा, बीत गई सारी ही ।

अब तक दर्श पीव न पाया, तम है गहर घनेरा ॥

४.प्रियतम मेरा अनत अपारा, अलख धनी अविनाशी ।

दुख काटे वह जनम जनम के, मन प्रकाश बहुतेरा ॥

५.पी कब आवे विपद हरे जो, पीर हृदय की जाए ।

देखत देखत थाके नयना, धीरज टूटा मोरा ।।

६.तीर्थ शिवोम् आओ मोरे सजना, तुम्हें कठिन न कुछ भी ।

हिरदय शीतल मेरा कर दो, राह देखूं नित तेरा ॥

आह भरूं और चाह करूं मैं

१. आह भरूं और चाह करूं मैं, पीय मिलन की मैं सजनी ।
नयनन अविरल नीर बहुत है, आश मिलन की मैं सजनी ॥
२.मेरा प्रियतम दीखत नहीं, पर कण कण में बसता है ।
मैं ही विघ्न बना है भारी, हटा न पाऊं मैं सजनी ॥
३. हिरदय तड़पत रोवत अखियां, चैन तो पल भर नाहीं ।
कैसे मिले पीय मो आय, जतन करूं क्या मैं सजनी ॥
४.जप तप संयम तीरथ सेवूं, माया हटत है नाहीं ।
फिर फिर मन विषयों के माहीं, रोक सकत नहीं मैं सजनी ॥
५. सद्गुरू मोरा किरपा राखे, प्रियतम देत मिलाए ।
विनय करत हूं श्री चरणों में, और करूं क्या मैं सजनी ॥
६.तीर्थ शिवोम् विकल है मनवा, पीय मिलन के ताईं ।
कब मिलसी मेरा प्रियतम प्यारा, विनय करत हूं मैं सजनी ॥

जब युवाओं को देखता हूं

१. जब युवाओं को देखता हूं मैं, मन में इक खयाल आता है।
कितनी जल्दी से हाथ चलते हैं, पलक में सभी हो जाता है ।।

२.कभी मैं भी तो इस तरह ही था, हाथ मेरे भी तेज चलते थे ।
अब न जाने क्या हुआ मुझ को, हाथ इक दम सहम ही जाता है ।।

३.क्या है जो हाथ मेरा यह काम उस तरह अब नहीं करता ।
फिर खयाल आता है इकदम यह, वर्ष सत्तर हुआ ही जाता है ।।

४.अब तो आयु है बीतती जाती, पांव कमजोर, हाथ हिलते हैं ।
अब आंख से भी दिखता कम है, वक्त तो अब निकलता जाता है ।।

५.हाथ कब तक हैं साथ यह मेरे, सारा ढांचा ही अब है जाने को।
इस जगत में देह कब तक है, इस के जाने का वक्त आता है ।।

६. ऐ युवाओं संभल के तुम चलना, मन में साफ यह समझ लेना ।
इक दिन तुम्हें भी कूच करना है, कोई बैठा यहां नहीं रहता ।।

७. शिवोम् समझ ले इंसान जो इसको, वह न होता कभी दुखी जग में।
आखरी वक्त है सुखी जाता, सुखी सुखी हो जग से जाता है ।।

पहदीप

नयनन नींद कहां से आवे

१. नयनन नींद कहां से आवे, जीय मोरा अकुलावे ।

मनवा तो है पी संग लागा, भाग वह पर जावे ।।

२.नयनन में तो पीव समाया, पीव ही जग में दीखे ।

नींद कहां नयनन में जावे, पीव ही बैठा पावे ।।

३.जग में देखूं पीव समाया, पीव ही रूप अनेकों ।

कण कण व्यापक पीव मेरा है, क्यों मनवा भरमावे ।।

४.नयन न झपकूं, न मैं मूदूं, आ के चला न जावे ।

दिन राती, जागत रह जाऊं, नींद ठगी रह जावे ।।

५. ऐसी दशा भई नयनन की, न सोये न जागे ।

लगे रहत हैं राह यह नयनां, कहीं पीव दिख जावे ।।

६.तीर्थ शिवोम् ऐ मेरे नयनां, प्रेम का यह ही फल है ।

मन न चैन, नींद न आवे, पीर कलेजा खावे ॥

बागेश्री

मैं प्रेम प्रभु से काय किया

१.मैं प्रेम प्रभु से काय किया ।

अत्याचारी है बलकारी, हिरदय मोर चुराय लिया ।।

२.मनवा तो हरदम है तड़पत, नयनन नीर बहत है ।

उसका तो कुछ बिगड़ा नाहीं, मन का चैन है खाय लिया ॥

३.प्यासे नयनां पीय दर्स के, हार सिंगार न सोहे ।

राह देखत पथराई अखियां, पी बिन हिरदय रोय लिया ।।

४.खोज थकी मैं सारे जग में, पता नहीं पी का पाया ।

पिय ही आन मिले मो अब तो, दुख ही दुख है पाय लिया ।।

५.कौन समय जो नेह लगाया, होत न कुछ पछताए ।

अब तो गांठ प्रेम की पड़ गई, पी मन में बिठलाय लिया ।।

६.तीर्थ शिवोम् सुनो हे प्रियतम, दासी हूं चरणों की ।

सांस सांस तोहे ही सिमरूं, तुम से नेह लगाय लिया ॥

जब प्रेम हृदय में उमड़ पड़ा

१.जब प्रेम हृदय में उमड़ पड़ा, तब मन आनन्द से भर जाता ।
तब चिन्ता जग की कौन करे, तब मनवा मस्त है बन जाता ॥

२.जब प्रेम की गंगा बहती है, और टूट किनारे जाते हैं ।
विषयों का पीछा कौन करे, सीमित असीम है बन जाता ॥

३.जब आती बाढ़ है अन्तर में, तब प्रेम ही प्रेम सुहाता है ।
साधन की चिन्ता कौन करे, तब प्रेम हो साधन बन जाता ॥

४.मीरा का रंग चढ़े जिस पर, वह प्रेम के रंग में है रंगता ।
तब वेश की चिन्ता कौन करे, प्रेमी मतवाला बन जाता ।।

५.है प्रेम ही साधन प्रेमो का, जो मन को निर्मल है करता ।
निर्मल की चिन्ता कौन करे, प्रेमी निर्मल है बन जाता ॥

६.शिव ओम् प्रेम का रंग चढ़ा, जिस पर भी, जभी, कहीं पर भी।
वह बंधन मुक्त हुआ समझो, और राम का प्यारा बन जाता ।

भैरवी

प्रीत की रीत प्रभु तुम जानत

१.प्रीत की रीत प्रभु तुम जानत ।

नाते छोड़ जगत के सारे, प्रेम का नाता ही तुम मानत ।।

२. प्रेम के आगे कुछ न देखत, प्रेमी ही पर कृपावन्त हो ।

प्रेमी तुम को प्रिय बहुत हैं, प्रेमी को अपना ही मानत ।।

३.समझाऊं क्या भेद प्रेम मैं, प्रेम के ज्ञाता द्रष्टा तुम हो ।

हिरदय मोरा प्रेम से भर दो, भाव प्रेम को तुम हो मानत ।।

४.तीर्थ शिवोम् तेरे चरणों में, प्रेम की भिक्षा मांगे तुम से ।

दान करो प्रभु प्रेम का मुझ को, प्रेम का भेद तुम्हीं हो जानत ।।

जगत में जिन्दा दिखा न कोई

१.जगत में जिन्दा दिखा न कोई ।

सभी जीव काल मुख माहीं, मृत्यु पल पल होई ।।

२.जनम लेत और नित्य मरत जो, यह तो जीवन नाहीं ।

न ही जनम न मृत्यु आए, जीवन समझो सोई ।।

३.गुरू कृपा से यम भागत है, मृत्यु देत हटाए ।

जनम लेन को काम नहीं तब, अमर यही फल होई ।।

४.जनम मरण का फंदा छूटे, भगवत माहीं समाना ।

जो ही जाए परम पद पाए, वो ही जिन्दा होई ।।

५.तीर्थं शिवोम जा किरपा कोनी, वही परम पद पाए ।

नहीं तो जनम मरण ही माहीं, जिन्दा सो न होई ॥

श्याम तू कैसी बंशी बजाई

१.श्याम तू कैसी बंशी बजाई ।

मैं बिसराई सुध बुध सारी, मनवा लीन हुई जाई ।।

२. जब तू मधुर तान है छेड़त, उधर ही मन खिच जाए ।

रोके नही रुकत है मनवा, लगे न कहीं लगाई ।।

३. सोवत धोवत खावत गावत, मन में तान सुनूं हूं ।

जग मोरा बिगड़ाए दीना, यह क्या कहर कमाई ।।

४. तीर्थं शिवोम् आनन्दित मनवा, बंशी तान सुने वह ।

नाचत गावत ताल बजावत, रस मीठा बरसाई ॥

माया ठगनी हो

१. माया ठगनी हो, क्यों तड़पाए रही।

सारा जग तू वश में कीना, मन भरमाए रही ॥

२. जपी तपी संन्यासी सब ही, कोई छूट न पाया ।

सब को तू तरसाय रही है, दुखी है करत रही ॥

३.मन चंचल बुद्धि मलीन है, सब तेरी किरपा है ।

रूप कुरूप सरूप बने तू, सुध बिसराय रही ॥

४.बिन गुरू कृपा न माया छूटत, मैं हूं शरण तिहारी ।

तीर्थ शिवोम् दुखी है कीना, माया खात रही ॥

मोहे राम जपा न जाए

१.मोहे राम जपा न जाए ॥

२.मन चंचल है कर्म संचित, बाहर ही को जाए ।।

३.जतन करूं वृत्ति को अन्तर, थिरता खोती जाए ।।

४.मन में जब चंचलता बैठी, थिरता कैसे आए ।।

५.कौन उपाय करूं मैं जिस से, मन थिरता पाए ।।

६.कौन बताए भेद है ऐसा, प्रभु मारग खुल जाए ॥

७.तीर्थ शिवोम् कृपा गुरूदेवा, मन में प्रेम समाए ।।

मनवा क्यों जाए जग माहीं

१.मनवा क्यों जाए जग माहीं।

बालू महल जगत यह सारा, ढह जाए छिन माहीं।।

२. मृग तृष्णा भान्ति जल दीखत, प्यासा जाए धाए।

पर जल तो कुछ हाथ न आए, प्राण तजे छिन माहीं॥

३.यह जग है भव सागर नाईं, तरना बहुत कठिन है।

अन्दर उतरे जल पीवन को, डूब मरे छिन माहीं॥

४.जगत बनाया कर्म करन को, मोह करन को नाहीं।

मेरा तेरा जो है करता, बंधन में छिन माहीं॥

५.कर्म करे कर्मों को काटे, संचय कर्म न करता।

जो भी ऐसे कर्म करत है, मुक्त होय छिन माहीं॥

६.तीर्थ शिवोम् सुनो हे मनवा, न कर मोह जगत से।

कर्म करे, मन वश में राखे, प्रभु पावे छिन माहीं॥